# सद् सन्तान उत्पत्ति प्रबन्ध

( Good Child Birth Management )

प्रस्तुतकर्ता :–

## रामराज्य आहवाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

– .. – .. – .. – .. – .. – .. – .. –

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट– III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09313055063

# सद् सन्तान उत्पति प्रबन्ध

यह एक ऐसा ज्ञान तथा जानकारी है जिसके अभाव में नव दम्पत्ति अज्ञानतावश अपने शारीरिक सम्बन्धों का पूर्ण सच्चा फल नही पा पाते है। यह एक ऐसा ज्ञान है जो नव दम्पत्ति को विवाह बन्धन के समय अवश्य कराया जाना चाहिए ताकि वे अपने गृहस्थ के वंश को एक अच्छा बीज दे सकै। यह जानकारी इस प्रकार है।

स्त्री का मासिक धर्म जिस दिन से शुरु होता है उस दिन से 7 दिनों तक उसका त्याग बताया गया है उनका मुख भी न देखना उनसे दूर रहना आदि। कहते हैं उनके शरीर में इस दौरान पाप का निवास रहता है शास्त्रों में इन 7 दिनों में उस स्त्री के हाथ का अन्न खाना भी वर्जित बताया गया है। स्वाभाविक है उसके स्पर्श से इन दिनों में कुछ Infections की सम्भावनाऐं रहती होंगी क्योंकि इन दिनों में गन्दगी राहती है तथा इस गन्दगी से स्त्री का मन भी प्रभावित हुआ रहता हैं। इन 7 दिनों कें अन्तर्गत यदि ऐसी स्त्री गर्भ धारण करती है तो
प्रथम व द्वितीय दिन गर्भाधान होने पर उत्पन्न सन्तान प्रसवकाल में ही अन्यथा प्रसूतिगृह में मर जाती है
तीसरे दिन गर्भाधान के फलस्वरुप उत्पन्न पुत्र अंगहीन एवं अल्पायु होता है तथा
चौथे दिन गर्भाधान के फलस्वरुप उत्पन्न पुत्र अल्पायु विद्याहीन व्रतभ्रश्ट पतित परस्त्री गामी और दरिद्र होता है।

चौथे दिन वह स्त्री कपडों सहित स्नान करने पर शुद्ध होती है तथा

पॉचवे दिन स्त्री को मधुर भोजन करना चाहिए। कडुआ, खारा, तीखा तथा उण भोजन से पांचवे दिन स्त्री को दूर रहना चाहिए क्योंकि उस समय स्त्री का यह क्षेत्र गर्भाशय औषधि का पात्र हो जाता है और फिर उसमें संस्थापित बीज अमृत की तरह सुरक्षित रहता है।

उस औषधि क्षेत्र में गर्भाधान करने वाला स्वामी अच्छी स्वस्थ संतान को प्राप्त करता है। पान खाकर पुष्प और चन्दन से युक्त होकर तथा पवित्र वस्त्र धारण करके मन में धार्मिक भावों को रखकर पुरुष को सुन्दर शय्या पर संवास करना चाहिए।

गर्भाधान के समय पुरुष की मनोवृति जिस प्रकार की होती है उसी प्रकार के स्वभाववाला जीव गर्भ में प्रविष्ट होता है।

सातवे दिन के बाद पितरों एंव देवताओं के पूजन अर्चन तथा व्रत करने के योग्य होती है। एवं इस एक सप्ताह के मध्य गर्भाधान के फलस्वरुप उत्पन्न होने वाली सन्तान मलिन मनोवृति वाली होती है।
प्रायः (ऋतुकाल) यह काल मासिक धर्मशुरु हाने से 16 रात्रियों तक का बताया गया हैं।
आठवे दिन गर्भाधान से पुत्र की उत्पत्ति होती है युग्म रात्रियों में गर्भाधान से पुत्र तथा अयुग्म विषम रात्रियों में गर्भाधान से कन्या की उत्पत्ति होती है। अर्थात,
आठवी रात्रि में पुत्र, नौवी रात्रि में कन्या एवं, दसवी रात्रि में पुत्र, ग्यारहवी रात्रि में कन्या की उत्पत्ति होती है।
चौदहवी रात्रि में गर्भाधान होने पर गुणवान, भाग्यवान और धार्मिक पुत्र की उत्पत्ति होती है। सामान्य मनुष्यों को भाग्यवश इस चौदहवीं रात्रि में गर्भाधान का अवसर प्राप्त नही होता है।
व्याख्या : अर्थात ऋतुकाल के पश्चात सुरक्षा हेतु अगर तीन दिन और छोड दो तो बाद के इन दस दिनो में संबास सुरक्षित हैं परिवार नियोजन की दृष्टि से अगर कृत्रिम साधनों का सहवास के दौरान उपयोग न भी किया जाए तो पूरी उम्मीद है कि गर्भाधान नहीं होगा। 99: यही संभावना है शत प्रतिशत तो इस विषय कुछ कहा नही जा सकता है। कुदरत के आगे बस किसी का नहीं चलता।

मेरा ऐसा मानना है कि अगर उपर लिखित मासिक चक्र (जो सामान्यत : 28 दिन का होता है) को अगर सही से समझ लिया जाए तो गृहस्थियों के वंश सुखी हो जाऐगे तथा नव दम्पत्ति अपने गृहस्थ संसार को एक समृद्ध सुखी एवं अच्छा संसार बना पाऐगे तथा समाज को अपने संसार परिवार को एक अच्छा भविष्य दे पाऐगे।

आगे मैडिकल दृष्टि से भी मासिक चक्र का 1/3 हिस्सा अन उपजाऊ (Infertile) बताया गया है। मैडिकल दृष्टि से मासिक चक्र निम्म प्रकार है

Fertility Awareness Cycle